'आगे चलें कुछ करें'
- यह ही है समय -

पतझड़ का समय। रास्ता सूखे पत्तों से भरी हुई है। खामोशी का सुन्दरता। सबकुछ चित्रित रहते हैं। आयुष को जानता नहीं है कि क्यों वह वहाँ बैठ रहा है। वह अकेलापन को पसंद करना शुरु किया। हमेशा जीवन में हम अकेला होते हैं क्योंकि हम यह दुनिया में अकेला आयी और यहाँ से अकेला जाएँगे। जीवन सबकुछ देता है - खुशा, दुःख, प्यार, दोस्त, परिवार, सबकुछ। फिर भी हम किसी से खुश नहीं है। आयुष को यह सब सोचना एकदम मज़ा होने लगा। खामोशी को एक गाना रोक लिया। फोण पर डाक्टर आवाज सुनाता है। आयुष ने फोण उठाकर बोला - "हलो डाक्टर"

डाक्टर कुछ समय तक कुछ नहीं बोला।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

फिर कहा: "हाँ आयुष, कैसे हैं?"
- आयुष : "ठीक है।"
डाक्टर की आवाज़ कुछ अजीब सा लगता था। और बोला :- "आयुष, अब तुम यह ध्यान से सुनो। आज तुम्हारेलिए यह ...."
- "क्या है डाक्टर? बोलिए।" - आयुष पूछ लिया।
कुछ समय के बाद अरुन कहा :- "अब तुम्हारा ज़िन्दगी में सिर्फ कुछ दिनों ही है बाकी, तो तुम करो ... सबकुछ"
यह कहकर डाक्टर ने फोण काल खत्म किया। आयुष केलिए वह अतिशय होने का बाद नहीं था। क्योंकि उसको जानता था। शराब और जीवन का खेल ऐसा था। वह सूखे पत्तों से भरी हुई रास्ता में वह चलता है। सब याद में आ गयी।

* * * * * *

वह खुद बोला : अब मेरा समय

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

कम है। सब कहना ही है।

'आयुष मेहरा' - पैसों का राजा। सब उनके पीछे थे। जीवन को आस्वादन करने केलिए वह सब कुछ किया। उनके मन में कोई सच नहीं गलत नहीं। सिर्फ पैसे कमाना चाहता था। यह दस साल पहले की स्थिति थी। वह हमेशा जीवन पर रुकना भरने की कोशिश कर रहा था। उसको दुःख आने के केलिए वहाँ कोई रास्ता नहीं था। अब उसको देखो। जीवन ही है हमारा अध्यापक। हम यह जीवन से सबकुछ सीखा है। जैसे आयुष भी सबकुछ सीख लिया। अब उसके पास कोई समय नहीं है। इसलिए वह बाकी समय को अच्छी तरह उपयोग करने का निश्चय लिया। आयुष चिंतित होने क्यों। पहले मैं क्या करूँ?

* * * * *

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

उसके मन में आयी "माँ"।

प्रिय माँ,

कैसे हैं आप? मैं यह पत्र आप से कुछ कहने केलिए लिखता हूँ। मुझे मैं जानता हूँ कि मुझसे आपको कुछ नहीं मिला है। आपके सब दुःखों के कारण मैं हूँ। पर अब आप उदास होने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि मैं जाता हूँ। आपसे, मीना से, और यह दुनिया से.....। डाक्टर अजय ने मुझे बुलाया और सबकुछ कहा। यह शराब, नशा सब ही है मेरा कमज़ोरी। माँ, मैं आपसे आखरी बार मिलना चाहता हूँ। पता नहीं कि क्यों मेरे आँखों से यह आँसू आ जाते हैं। मैं तो बिलकुल स्वस्थ हूँ। फिर भी मेरे आँखों से यह आ जाते है। मैं ने यह जीवन में कोई सच्ची काम नहीं किया। मेरी आखरी इच्छा यह ही है। इसलिए

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 642 Participant Code: 109

मैं आपसे कुछ मदद चाहता हूँ। मुझे मेरी बीवी मीना को और मेरी बेटी अनु को मिलना है तो अगले हफ्ते में मैं आता हूँ। मुझे पता है मीना को मुझे पसंद नहीं है पर मैं देखना चाहता हूँ।

आपका बेटा,
आयुष मेहरा

sd/-

* * * * *

मन के घटनाओं के लडाई चलते रहते थे। फिर भी यह लिखी हुई पत्र से आयुष के मन के लडाई कुछ समय तक शांत हो गई। माँ तो माँ ही होती हैं। अपने बच्चों के सब चीज़ों माँ को पता है। यह बाकी होने भी जीवन के पहला लक्ष्य, 'परिवार को मिलना' करने केलिए बन गयी।

* * * * *

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

बंबई से अपने गाँव तक आना आयुष केलिए कोई कठिन काम नहीं था। वे अखिर बार वहाँ पहुँच गयी। पता नहीं कि वहाँ क्या होने वाला है। अपने गाँव, पतझड़ के बाद सर्दी को स्वागत करने की तैयार में है। उसके साथ वह गाँव आयुष को भी स्वागत की। वह सर्दी की छोटा बारिशा ने उसको स्वागत किया। उसको होने लगा कि वह बारिशा के ठंडा में अपनी सब ~~अदासी~~ उदास विलीन हो गयी। वैसे चलते-चलते वह अपने घर के देहरियों में आ गयी। बचपन के यादों ने उसके सर पर आ गई। वह बड़ा श्रेत्र के महोत्सव, बड़े पेड़ों के और उसके चिड़ियों के खेलना, सब कुछ आ गई। हमेशा यादों मे आदमियों को बच्चा बनाएगा। यह ही है बचपन के यादों की शक्ति।

* * * * *

वह यादों में विलीन हो गये आयुष ने अपने घर के दरवाज़ो के सामने अपनी प्यारी माँ को देखा। माँ अब भी पुरानी जैसे है। दस साल हो गई। फिर भी....। माँ और आयुष दोनों आँखों में आ गयी। माँ के कमल की तरह आँखों से आँसु आ जाती थी। आयुष के आँखों से भी वह आयी। दोनों कुछ नहीं बोला। सिर्फ रोते रहते थे। अचानक माँ ने अपने बेटे को गला लगाया। आयुष ने अतिशय हो गई और उसको लगा कि अब वह सबसे सुरक्षित हाथों में है। और उसको जीने की इच्छा आयी। वे आवाज़ से चिल्लाकर रोया। और बोला, "माँ, मुझे माँफ किजए। मैं आपकी बातों को ध्यान नहीं लिया। मुझे,..... माँफ किजए माँ कृपया किजिए माँ"

61-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2023 ജനുവരി 3 – 7 കോഴിക്കോട്

Item Code: 642 Participant Code: 109

माँ भी रोती-रोती कहा : "बेटा आयुष : एक बार भी बोलो माँ"
माँ के आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल हो गई और कहा :
"बेटा, रोना मत। मैं हूँ ना। भूतकाल गई है। उससे चिंतित होने से कुछ नहीं मिलेगा। तो आगे बाकी जीवन के बारे में सोचो"
यह सुनकर आयुष ने कहा :-
"पर मेरी समय हो गया है। मैं क्या करूँ?"
माँ अपनी आँखों के आँसू को हटा दिया और बोला :- "ऐसा नहीं है। हमें पता है कि तेरा समय हो गया है। पर... पर अब आगे चलने का समय है। जीवन में कुछ करने का समय है। अपना सब गलती को सही करने का मौका है यह समय।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

जीवन में जीना थे है। अब तक उसे जीत नहीं पायी पर अब आगे चलो। खुद विश्वास करो। मैं हूँ, तुमके पास"

आयुष को सब समझ गई। अब हो है उसका समय। वह खुद विश्वास करने का खुद निश्चय लिया। पर उसका जीत देखने केलिए वहाँ उसको बीवी और बेटी नहीं थी। वे केरला गई थी फिर भी वे अपनी उदास को हटा दी।

* * * * *

आयुष अपने जीवन के बारे में सोच लिया और माँ से आशिर्वाद ले लिया और वापस बंबई गई। वह डाक्टर अरुन से मिला और बहुत समय बात किया। ~~अगले हफ्ते में वह~~

अगला दिन अचानक आयुष को सिरदर्द हो गई और वह

डाक्टर के पास गई। पर जाने वक्त उसका मौत हुई। उसको हेड ट्यूमर था। ~~और बहन~~ यह बात सुनकर माँ ~~बड़~~ वहाँ आई और रोने लगी। पर डाक्टर ने माँ से बात की कि वह जीत गई।

अरुन ने कहा :- "माँ आपका बेटा मर गई है। पर फिर भी वह जी रहा है"

माँ ने यह सुनकर अतिशय होने लगी : "क्या?

" जी, ~~मैं~~ वह मुझे कल मिला था और कहा कि वह जीना चाहता है और ~~इ~~ अपना सब गलतीयाँ ~~सब~~ ठीक करना ~~चाह~~ चाहता है। तो इसलिए वह अपना आँखें, हृदय सब दान करने का फैसला की। और वह अब जी रहा है। यह ही उसका विजय।"

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

माँ खुशार होने लगी और बोला:
"सच्ची? क्या अब वह दूसरा लोगों से जी रहा है?"
"जी, मेरा बेटा जीत गई।"
डाक्टर ने फिर बोला:- "एक और बात है, वह अपनी आखों ने सूरज को दिया। क्योंकि सूरज को अपने आँखों आयुष के कारण नष्ट हो गया थी पर अब वह जीत गई।"
माँ ने यह सुनकर खुशी से रोया। अपना बेटे से वह बहुत अभिमान होने लगी। वह सर्दी के समय गई। पूरा खुशार के बारिश शुरु होने लगा।

* * * *